पाठ – 20

उनको प्रणाम (कविता)

कवि - नागार्जुन

प्रस्तावना

आपने अपने आसपास ऐसे लोगों को देखा होगा, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर साहस और हौसले के साथ अथक प्रयास और संघर्ष किए लेकिन किन्हीं कारणों से वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। ऐसे लोगों को भी देखा होगा, जो बड़े ही ईमानदार, मेहनती, संघर्षशील और सदैव उत्साह से भरकर काम करते हैं। जरूरी नहीं कि ये लोग बहुत धनवान या सुविधा सम्पन्न ही हों, बल्कि कई बार तो लोगों को मामूली सुविधाओं का भी अभाव झेलना पड़ता है। अभावों में रहते हुए भी ये किसी से कोई शिकायत नहीं करते, दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाते, अपने अभावों का दूसरों के सामने रोना नहीं रोते। इस पाठ में कवि ने ऐसे ही लोगों क प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम किया है। आइए, इस पाठ को पढ़ते हैं।

जो नहीं हो सके पूर्ण काम
मैं उनको करता हूं प्रणाम
कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए,
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए।
उनको प्रणाम .... (1)
जो छोटी सी नैया लेकर
उतरने करने को उदधि–पार,
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार
उनको प्रणाम .... (2)

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह–रह, नव–नव उत्साह भरे,
पर कुछ ने ले ली हिम–समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
उनको प्रणाम .... (3)

कृत–कृत्य नहीं जो हो पाए,
प्रत्युत फांसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
उनको प्रणाम .... (4)

दृढ़ व्रत और दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति–मत,
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत
उनको प्रणाम .... (5)

जिनकी सेवाएं अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर–चूर।
उनको प्रणाम .... (6)

व्याख्या

(1) जो नहीं हो सके .... उनको प्रणाम्।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक की कविता 'उनको प्रणाम' से लिया गया है, जिसके कवि नागार्जुन हैं।

प्रसंग : कविता की प्रारंभिक पंक्तियों में कुछ लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट किया गया है।

व्याख्या- प्रारंभिक पंक्तियों में कवि कुछ लोगों के प्रति आदर **एवं** सम्मान का भाव प्रकट कर रहा है।

आप जानते हैं कि लोगों के प्रति ? उन लोगों के प्रति जिन्होंने उद्देश्य को प्राप्त **करने** के लिए परिश्रम और संघर्ष किया, लेकिन जो किन्हीं कारणों से अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके।

कवि ऐसे वीरों के बारे में बात कर रहा है, जो यद्ध के मैदान में पूरी तैयारी और उत्साह के साथ गए थे, जिनके पास अभिमंत्रित तीर थे यानी ऐसे तीर थे जो लक्ष्य को **भेदने** में पूरी तरह सक्षम थे। मगर जब युद्ध हुआ तो किन्हीं कारणों से उनके तीर लक्ष्य को भेदने में नाकाम हो गए अर्थात् अपना कार्य ठीक प्रकार से नही कर सके, अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके, जो युद्ध के मैदान म गए तो लड़ने के लिए थे लेकिन लड़ाई समाप्त होने से पहले ही उनके तरकस खाली हो गए।

विशेष :इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रूचिपूर्ण है ।

इस कविता में कवि इन पंक्तियों के माध्यम से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्षरत् लोगों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

(2) जो छोटी सी .... उनको प्रणाम।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्ति**याँ** हमारी पाठ्य पुस्तक **की कविता** 'उनको प्रणाम' से लिया गया है, जिसके कवि नागार्जुन हैं।

प्रसंग :- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि उन लोगों की बात कर रहा है जिनके सपने पूरे नहीं हो पाए हैं।

व्याख्या- यहाँ कवि ऐसे लोगों की बात कर रहा है, जो छोटी नौका लेकर समुद्र को पार करने चले थे लेकिन उनकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकी आर वे समुद्र में ही समा गए। **यहाँ** कवि ऐसे लोगों के साहस और प्रयत्नों का आदर करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। ऐसे लोगों में इतना साहस और लगन होती है कि वे अपने प्राणों तक की चिंता नहीं करते।

विशेष : इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

निराकार शब्द का अर्थ होता है जिसका कोई आकार न हो, परन्तु **यहाँ** पर निराकार शब्द का अर्थ है अनाम लोगों के जीवन का अंत होने से है |

(3) जो उच्च शिखर .... उनको प्रणाम।

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्य पुस्तक **की कविता** 'उनको प्रणाम' से लिया गया है, जिसके कवि नागार्जुन हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि ऐसे लोगों के विषय में बता रहा है, **जो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाने पर भी नये-नये उत्साह के साथ बार-बार कोशिश करते रहें |**

व्याख्या- कवि ने ऐसे उत्साही लोगों का जिक्र किया है, जो बर्फानी पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी पर **पहुँचना** चाहते थे। केवल चाहते ही नहीं थे–इसके लिए उन्होंने कोशिश भी की। कोशिश भी एक बार नहीं, अनेक बार फिर–फिर अपने उत्साह को बटोरकर। पिछली असफलता को

भूलाकर फिर नया उत्साह, नया प्रयास। आदर करने लायक ही हैं न ऐसे लोग! कवि भी ऐसे लोगों को प्रणाम कर रहा है।

विशेष : **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है।**

कोशिश करने वालों को कवि ससम्मान प्रणाम कर रहा है।

(4) कृत–कृत नहीं .... उनको प्रणाम।

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्य पुस्तक **की कविता** 'उनको प्रणाम' से लिया गया है, जिसके कवि कवि नागार्जुन हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि ऐसे लोगो को प्रणाम कर रहा है जो देश **को स्वतंत्र** कराने के लिए प्राण दे गये परन्तु आजादी का सुख नहीं ले पाए।

व्याख्या- कवि के कहने का आशय यह है कि बहुत से देशभक्त ऐसे थे, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी, लेकिन जो आजादी का सुख नहीं ले पाए। ऐसे त्यागी व्यक्तियों तथा निस्वार्थ भाव से काम करने वालों को हम जल्दी ही भूल गए, जबकि ऐसे लोगों को हमें सदव याद रखना चाहिए था। कवि **यहाँ** पर हमारी एक कमी की ओर संकेत कर रहा है कि हम सभी अच्छी-बुरी बात जल्दी ही भूल जाते हैं **अर्थात्** हम उन त्यागी वीरों को भी बहुत जल्दी भूल जाते हैं। कवि ऐसे लोगों को याद करके प्रणाम करता है, जिनके संघर्ष और बलिदान के कारण ही हम आज स्वतंत्र देश के नागरिक हैं।

विशेष : **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है।**

दुर्गम शब्द का अर्थ है जिसे दबाया न जा सके अर्थात् प्रबल। यहां दुर्गम साहस से कवि का आशय ऐसे साहस से है, जिसे दबाया न जा सके।

(5) दृढ़ व्रत .... उनको प्रणाम!

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्य पुस्तक **की कविता** 'उनको प्रणाम' स लिया गया है, जिसके कवि नागार्जुन हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि सफलता और सार्थकता के बारे में बताना चाहता है।

व्याख्या-कविता की इन पंक्तियों में ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है, जिनकी सेवाओं की तुलना किसी से नहीं की जा सकती तथा जिन्होंने निस्वार्थ समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। इन लोगा ने अपने कार्यों का कभी **प्रचार** नहीं किया। आशय यह है कि दिन रात देश, समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित ऐसे लोगों ने अपने त्याग और बलिदान को देश के प्रति अपना कर्तव्य समझा। उन्होंने श्रेय पाने की चिंता कभी नहीं की। इनका नाम किसी अखबार या किताब में नहीं छापा।

विशेष : इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है ।

कवि ने इस कविता में सार्थक प्रयासों को प्रणाम किया है।